भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

तारांकित प्रश्न सं. 182*

31 जुलाई, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

आयुष प्रणालियों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना

*182. श्री मितेश पटेल बकाभाई:
श्री राहुल सिंह लोधी:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी सहित आयुष पद्धतियों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने और मान्यता देने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं;

(ख) वर्ष 2025-26 के दौरान आयुष उत्पादों और सेवाओं के अंतर्राष्ट्रीय सहयोगों, समझौता ज्ञापनों और निर्यात का ब्यौरा क्या है; और

(ग) घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक स्वास्थ्य परिचर्या प्रणालियों के साथ आयुष के एकीकरण में अब तक कितनी प्रगति हुई है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (ग): विवरण सदन के पटल पर रखा गया है।

लोक सभा में 31 जुलाई, 2026 को पूछे जाने वाले तारांकित प्रश्न संख्या 182* के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) और (ख): आयुष मंत्रालय, आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी सहित आयुष के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय क्षेत्र की योजना को कार्यान्वित कर रहा है। इस योजना के तहत, मंत्रालय आयुष उत्पादों और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए भारतीय आयुष दवा विनिर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को सहायता प्रदान करता है; आयुष चिकित्सा पद्धतियों के अंतरराष्ट्रीय प्रचार, विकास और मान्यता को सुविधाजनक बनाता है; अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हितधारकों के बीच अंतर्वार्ता और आयुष के बाजार विकास को बढ़ावा देता है; विदेशों में आयुष शैक्षणिक पीठों की स्थापना और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पद्धतियों के संबंध में जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देने और इसका सुदृढ़ीकरण करने के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं/संगोष्ठियों के आयोजन के माध्यम से शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देता है।

आयुष उत्पादों और सेवाओं के निर्यात और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2025-26 के दौरान आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विदेशों के साथ हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों का विवरण **संलग्नक-I** में दिया गया है।

(ग): आयुष मंत्रालय द्वारा देश में आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धति के साथ आयुष पद्धतियों के एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की गई हैं। इनमें शामिल हैं:

राष्ट्रीय स्तर:

i) डीजीएचएस के तहत आयुष वर्टिकल की स्थापना (2023): आयुष मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएच एंड एफडब्ल्यू) के बीच सहयोग के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) के तहत एक आयुष वर्टिकल की स्थापना की गई है। यह आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रमों की आयोजना, निगरानी और पर्यवेक्षण के लिए एक समर्पित संस्थागत तंत्र के रूप में कार्य करता है और स्वास्थ्य देख-रेख सेवाओं, जन स्वास्थ्य कार्यक्रमों, चिकित्सा शिक्षा और क्षमता निर्माण में आयुष के एकीकरण के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है। आयुष वर्टिकल ने नैदानिक एकीकरण को सुविधाजनक बनाने के लिए साक्ष्य-सूचित मानक उपचार दिशानिर्देश विकसित किए हैं। छः सामान्य मस्कुलोस्केलेटल विकारों (2024) और पांच सामान्य चयापचय संबंधी विकारों (2025) के लिए एसटीजी प्रकाशित किए गए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो के सहयोग से राष्ट्रीय मास्टर ट्रेनर कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं, जिसके बाद राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में क्रमिक प्रशिक्षण दिया गया है।

ii) भारत सरकार ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधा केंद्रो के सह-स्थापन की कार्यनीति अपनाई है, जिससे रोगियों को एक की स्थान पर चिकित्सा की विभिन्न पद्धतियों का विकल्प प्राप्त होता है। आयुष चिकित्सकों/पैरामेडिक्स का नियोजन और उनके प्रशिक्षण को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सहयोग प्रदान किया जा रहा है, जबकि आयुष अवसंरचना, उपकरण/फर्नीचर और दवाओं के लिए सहायता राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) के तहत आयुष मंत्रालय द्वारा साझा जिम्मेदारियों के रूप में प्रदान की जा रही है। एनएचएम- चिकित्सा सूचना प्रणाली (एमआईएस) डेटाबेस के अनुसार 31.12.2025 तक देश भर में 6302 पीएचसी, 3191 सीएचसी और 475 डीएच को सह-स्थापित किया गया है।

iii) वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज (वीएमएमसी) और सफदरजंग अस्पताल (2022) और लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज (2023), नई दिल्ली में एकीकृत आयुष विभाग स्थापित किए गए हैं। ये विभाग पंचकर्म

सहित निवारक, प्रोत्साहक और चिकित्सीय स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं। आयुष अनुसंधान परिषदें भी वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज और डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में विस्तारित आयुष ओपीडी सेवाएं प्रदान कर रही हैं।

iv) आधुनिक स्वास्थ्य देख-रेख पद्धति के साथ आयुष के एकीकरण के लिए आयुष मंत्रालय के तहत अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा की गई पहलों का विवरण **संलग्नक-II** में दिया गया है।

v) आयुष स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के लिए भारतीय जन स्वास्थ्य मानक (आईपीएचएस) (2024): आयुष्मान आरोग्य मंदिरों और आयुष अस्पतालों के लिए आईपीएचएस विकसित किए गए हैं, ताकि अवसंरचना, मानव संसाधनों, दवाओं और सेवा प्रदायगी की गुणवत्ता को मानकीकृत किया जा सके, जिससे जन स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के भीतर आयुष सेवाओं का एकीकरण सुदृढ़ किया जा सके।

vi) जन स्वास्थ्य एडवाइजरी: मंत्रालय ने राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) के समन्वय से हीट वेव (2024) और मंकी पॉक्स (2024) पर आयुष जन स्वास्थ्य एडवाइजरी जारी की हैं, जो राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य तैयारी और अनुक्रिया में आयुष के एकीकरण का समर्थन करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर:

आयुष मंत्रालय द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों में पारंपरिक चिकित्सा के एकीकरण को सुविधाजनक बनाने के लिए कई पहलें की गई हैं। इनमें शामिल हैं:

(i) 10 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली में डब्ल्यूएचओ द्वारा आईसीडी-11 पारंपरिक चिकित्सा मॉड्यूल 2 का शुभारंभ, जिससे रोगों का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीडी-11) में आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी के लिए रुग्णता कोड को शामिल किया जा सका, जिससे स्वास्थ्य सूचना पद्धतियों में पारंपरिक चिकित्सा का मानकीकृत प्रलेखन और रिपोर्टिंग सुविधाजनक हो गई।

ii) समग्र दृष्टिकोण के साथ तथा आयुर्वेद, सिद्ध, एवं यूनानी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए, स्वास्थ्य उपचारों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएचआई) के लिए पारंपरिक चिकित्सा उपचार श्रेणियों एवं सूचकांक के विकास हेतु डब्ल्यूएचओ तथा आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के मध्य समझौता।

iii) डब्ल्यूएचओ द्वारा आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध पर डब्ल्यूएचओ शब्दावली के निर्माण से संबंधित प्रकाशन, जो नैदानिक अभ्यास, शिक्षा, अनुसंधान और नीति का समर्थन करने के लिए विश्व स्तर पर सामंजस्यपूर्ण शब्दावली उपलब्ध कराता है।

iv) अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप मानकीकृत शिक्षा, प्रशिक्षण और गुणवत्ता-आश्वस्त नैदानिक अभ्यास को बढ़ावा देने के लिए आयुर्वेद और यूनानी (2022) के प्रशिक्षण और अभ्यास के लिए डब्ल्यूएचओ द्वारा बेंचमार्क दस्तावेजों का प्रकाशन।

v) डब्ल्यूएचओ और आयुष मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से विकसित योग प्रशिक्षण पर डब्ल्यूएचओ की तकनीकी रिपोर्ट, योग प्रशिक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक स्थापित करती है, जिससे स्वास्थ्य सेवा देखभाल में योग की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और वैश्विक एकीकरण में वृद्धि होती है।

vi) जामनगर, गुजरात में डब्ल्यूएचओ वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र (जीटीएमसी), साक्ष्य सृजन, अनुसंधान, नवाचार और राष्ट्रीय स्वास्थ्य पद्धतियों में पारंपरिक चिकित्सा के एकीकरण के सुदृढ़ीकरण के लिए एक वैश्विक ज्ञान केंद्र के रूप में स्थापना।

vii) पारंपरिक चिकित्सा में सहयोग के लिए विभिन्न देशों के साथ समझौता ज्ञापनों (एमओयू) के माध्यम से द्विपक्षीय सहयोग, जिसमें शिक्षा, अनुसंधान, विनियमन, गुणवत्ता आश्वासन और एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

viii) वैश्विक सम्मेलनों, मंत्रिस्तरीय बैठकों और डब्ल्यूएचओ के नेतृत्व वाली पहलों के माध्यम से एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल पर अंतर्राष्ट्रीय संवाद को बढ़ावा देना, जिसमें वर्ष 2023 और 2025 में भारत में आयोजित पारंपरिक चिकित्सा पर दो डब्ल्यूएचओ वैश्विक शिखर सम्मेलन शामिल हैं, जिनके माध्यम से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के भीतर पारंपरिक चिकित्सा के साक्ष्य-आधारित एकीकरण पर बल दिया गया।

ix) एकीकृत चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान और नैदानिक आदान--प्रदान को बढ़ावा देने के लिए, विदेशी विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संगठनों के साथ आयुष पीठों तथा संस्थागत साझेदारियों के माध्यम से शैक्षणिक सहयोग की सुविधा प्रदान करना।

*****

संलग्नक-I

क. पिछले वित्तीय वर्ष अर्थात् 2025-26 में आयुष और हर्बल उत्पादों का निर्यात नीचे दिया गया है।

वर्ष	**अमेरिकी डॉलर में मूल्य (मिलियन में)**
2025-26	**638.72**

स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएस)

ख. वर्ष 2025-26 के दौरान हस्ताक्षरित देश-स्तरीय एमओयू:

क्र.सं.	**शीर्षक**	**हस्ताक्षर की तिथि**	**देश का नाम**
1.	आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य सरकार और अंगोला गणराज्य के बीच एमओयू।	02/05/2025	अंगोला
2.	आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धितयों के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य सरकार के आयुष मंत्रालय और कजाकिस्तान गणराज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच एमओयू।	04/11/2025	कजाकिस्तान
3.	पारंपरिक चिकित्सा पद्धति और भारतीय आयुर्वेद के क्षेत्र में सहयोग पर भारत गणराज्य सरकार और तंजानिया संयुक्त गणराज्य की सरकार के बीच एमओयू।	19/12/2025	तंजानिया

ग. वर्ष 2025-26 के दौरान हस्ताक्षरित संस्थान-स्तरीय एमओयू

क्र.सं.	**शीर्षक**	**हस्ताक्षर की तिथि**	**देश का नाम**
1.	आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), आयुष मंत्रालय, भारत गणराज्य सरकार और इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रेडिशनल एंड अल्टरनेटिव मेडिसिन, पीएमबी 31, एचओ, घाना के बीच एमओयू।	02/07/2025	घाना
2.	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), गोवा, आयुष मंत्रालय, भारत गणराज्य सरकार और यूनिवर्सिटी ऑफ द फ्री स्टेट के बीच पारंपरिक चिकित्सा में शैक्षणिक सहयोग की स्थापना पर एमओयू।	12/08/2025	दक्षिण अफ्रीका
3.	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, आयुष मंत्रालय, भारत गणराज्य के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन (इसके बाद प्रथम पक्ष के रूप में संदर्भित) और एसोसिएशन रियूनियनीज डेस रिलेशंस एट क्रिएशन्स कल्चरलेस, रियूनियन आइलैंड (इसके बाद द्वितीय पक्ष के रूप में संदर्भित) के बीच योग के क्षेत्र में सहयोग और सहभागिता स्थापित करने पर एमओयू।	13/01/2026	रीयूनियन आइलैंड
4.	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), आयुष मंत्रालय, भारत गणराज्य सरकार और चैरिटे	01/06/2026	जर्मनी

	यूनिवर्सिटैट्समेडिसिन बर्लिन के बीच आयुर्वेद में शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग पर एमओयू।		
5.	केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) और यूनिवर्सिटी ऑफ साइबरजया, मलेशिया के बीच होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग पर एमओयू।	21/10/2025	मलेशिया
6.	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई) और मंगोलियन योग फेडरेशन (एमवाईएफ) के बीच एमओयू।	03.10.2025	मंगोलिया

घ. वर्ष 2025-26 के दौरान हस्ताक्षरित समझौते

क्र.सं.	**शीर्षक**	**हस्ताक्षर की तिथि**	**देश का नाम**
1.	विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के बीच पारंपरिक चिकित्सा उपचार श्रेणियों और आयुर्वेद, सिद्ध एवं यूनानी की टीएम पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण के साथ स्वास्थ्य उपचारों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएचआई) के लिए सूचकांक के विकास हेतु समझौता।	24/05/2025	डब्ल्यूएचओ
2.	भारत गणराज्य सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन के बीच पारंपरिक चिकित्सा पर वैश्विक शिखर सम्मेलन के संबंध में समझौता।	25/09/ 2025	डब्ल्यूएचओ

ङ. वर्ष 2025-26 के दौरान हस्ताक्षरित पीठ-स्तरीय एमओयू

क्र.सं.	**शीर्षक**	**हस्ताक्षर की तारीख**	**देश का नाम**
1.	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), आयुष मंत्रालय, भारत गणराज्य सरकार और नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी ओमान के बीच आयुर्वेद में "अकादमिक पीठ" (की स्थापना पर एमओयू।	17/12/2025	ओमान

संलग्नक-II

आयुष मंत्रालय द्वारा अपनी अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों के माध्यम से की गई पहलों का विवरण

क्र.सं.	**अनुसंधान परिषदें/राष्ट्रीय संस्थान**	**संस्थान द्वारा की गई पहलों का विवरण**
1.	केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस)	सीसीआरएएस ने आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ आयुर्वेद के एकीकरण के लाभों और व्यवहार्यता की जांच करने के लिए निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से विभिन्न शोध अध्ययन किए हैं: i. विशिष्ट देखभाल अस्पताल (सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली) में ऑस्टियोआर्थराइटिस (घुटने) के प्रबंधन के लिए आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ एकीकृत करने की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए परिचालन अध्ययन - पूर्ण। ii. हिमाचल प्रदेश में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (पीएचसी) स्तर पर राष्ट्रीय प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य सेवाओं में भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद) को लागू करने की व्यवहार्यता - पूर्ण। iii. कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग एवं स्ट्रोक की रोकथाम एवं नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) में आयुष पद्धतियों का एकीकरण - पूर्ण। iv. महाराष्ट्र के चयनित जिले (गडचिरोली) की पीएचसी में प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) के लिए आयुर्वेद उपचार को लागू करने की व्यवहार्यता (प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल स्तर पर प्रसवपूर्व देखभाल (गर्भिणी परिचर्या) के लिए आयुर्वेदिक उपचार की प्रभावशीलता: एक बहु-केंद्रीय परिचालन अध्ययन) - पूर्ण। v. एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद और आयुष मंत्रालय के बीच 11 मई, 2023 को एक समझौता ज्ञापन (एमओए) पर हस्ताक्षर किए गए। इस सहयोग के तहत, गैर-गर्भवती महिलाओं में आयरन की कमी से होने वाली एनीमिया पर एक सामुदाय-आधारित नैदानिक परीक्षण पूरा किया गया है। vi. इसके अतिरिक्त, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) और आयुष मंत्रालय ने सीसीआरएएस के माध्यम से संयुक्त रूप से चुनिंदा एम्स संस्थानों में आयुष-आईसीएमआर एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान उन्नत केंद्र (एआई-एसीआईएचआर) स्थापित करने की एक महत्वपूर्ण पहल की है। इन केंद्रों का उद्देश्य प्राथमिकता वाले रोग क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले साक्ष्य विकसित करना और एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल के लिए सुदृढ़ मॉडल तैयार करना है। चिह्नित केंद्र और अनुसंधान क्षेत्र निम्नानुसार हैं: क. एम्स दिल्ली: i) गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल विकारों के लिए एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान उन्नत केंद्र ii) महिला एवं बाल स्वास्थ्य के लिए एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान उन्नत केंद्र

		iii. एम्स जोधपुर: वृद्धावस्था स्वास्थ्य के लिए एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान उन्नत केंद्र iv. एम्स नागपुर: कैंसर देखभाल में एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान उन्नत केंद्र v. एम्स ऋषिकेश: वृद्धावस्था स्वास्थ्य के लिए एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान ए उन्नत केंद्र इन केंद्रों में ऑस्टियोआर्थराइटिस, हल्के संज्ञानात्मक विकार, क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) और न्यूमोकोनियोसिस में फुफ्फुसीय पुनर्वास, असामान्य योनि स्राव, पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम, गर्भकालीन मधुमेह, मेटाबोलिक डिसफंक्शन-एसोसिएटेड स्टीटोटिक लिवर डिजीज (एमएएसएलडी), अग्नाशय-पित्त संबंधी रोग, क्रोहन रोग, अल्सरेटिव कोलाइटिस, गैस्ट्रो-ओसोफेजियल रिफ्लक्स डिजीज (जीईआरडी), प्री-मेलिंगनेंट मुंह का छाला, सिर और गर्दन के स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा और सार्कोपीनिया पर शोध अध्ययन किए गए हैं। vii. आयुष के लिए निम्नलिखित रोगों के लिए मानक उपचार दिशानिर्देश (एसटीजी) विकसित किए गए हैं: क. आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में सामान्य मस्कुलोस्केलेटल विकारों के प्रबंधन पर मानक उपचार दिशानिर्देश (एसटीजी) अप्रैल, 2024 में प्रकाशित हुए जिसमें ऑस्टियोआर्थराइटिस, रुमेटॉइड आर्थराइटिस, सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस, लम्बर स्पोंडिलोसिस, फाइब्रोमायल्जिया और एडहेसिव कैप्सुलिटिस पर एसटीजी शामिल हैं। ख. आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में चयापचय संबंधी विकारों के प्रबंधन पर मानक उपचार दिशानिर्देश (एसटीजी) अप्रैल, 2025 में प्रकाशित हुए जिसमें मधुमेह मेलिटस, डिस्लिपिडेमिया, गाउट, गैर-अल्कोहलिक फैटी लिवर रोग और मोटापे पर एसटीजी शामिल हैं। ग. त्वचा संबंधी विकारों पर एसटीजी विकसित करने संबंधी कार्य प्रगति पर है।
2.	केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम)	परिषद ने डॉ. आरएमएल अस्पताल, डॉ. डीडीयू अस्पताल, सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली और जे.जे. अस्पताल, मुंबई में चार री-लोकेशन केंद्र स्थापित किए हैं। अनुसंधान प्रोटोकॉल को आईसीएमआर, आयुष और जीसीपी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए, बहु-विषयक विशेषज्ञों के परामर्श से विकसित किया गया और उसे अंतिम रूप दिया गया है। इन प्रोटोकॉल्स की समीक्षा संबंधित अनुसंधान उप-समितियों और वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एसएसी) द्वारा की जाती है। नैतिक पहलुओं की देखरेख संस्थागत आचार समिति (आईईसी) द्वारा की जाती है, और नियमित ऑनसाइट निगरानी आईएमआरएसी द्वारा की जाती है। यूनानी चिकित्सा को एकीकृत करने और बढ़ावा देने के लिए परिषद द्वारा आधुनिक शैक्षणिक/अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोगी परियोजनाएं भी शुरू की गई हैं। इसके अलावा, परिषद ने देश के 43 शैक्षणिक/अनुसंधान संस्थानों जैसे राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईपीईआर), हैदराबाद; आईसीएमआर-एनआईएन (राष्ट्रीय पोषण संस्थान), हैदराबाद; अन्ना विश्व विद्यालय, चेन्नई; आईसीएमआर- राष्ट्रीय

		पारंपरिक चिकित्सा संस्थान (एनआईटीएम), बेलगावी; सीएसआईआर-कोशिकीय एवं आण्विक जीवविज्ञान केंद्र (सीसीएमबी), हैदराबाद; सीएसआईआर- भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद इत्यादि के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं।
3.	केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच)	सीसीआरएच एकीकृत चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग और समन्वय के माध्यम से अनुसंधान करके होम्योपैथी को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा के साथ एकीकृत करने की दिशा में काम कर रहा है। परिषद ने सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली, लेडी हार्डिंग चिकित्सा महाविद्यालय और अस्पताल, नई दिल्ली, दिल्ली कंटोन्मेंट जनरल हॉस्पीटल, नई दिल्ली, बीआरडी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, गोरखपुर, उ. प्र. में स्थित नैदानिक परीक्षण इकाई, सिविल अस्पताल, आइजोल, मिजोरम और दीमापुर, नागालैंड के जिला अस्पताल में विभिन्न नैदानिक स्थितियों के लिए उपचार प्रदान करने हेतु एलोपैथिक अस्पतालों में होम्योपैथी उपचार केंद्रों की सह-स्थापना की हैं। परिषद ने होम्योपैथी को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था से जोड़ने की पहलें भी की है, जिसके तहत विभिन्न जन स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जैसे होम्योपैथी एनपीसीडीसीएस कार्यक्रम का एकीकरण, स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम (एसआरपी), होम्योपैथी फॉर हेल्थी टीथिंग' कार्यक्रम, जो 'स्वस्थ बच्चों के लिए होम्योपैथी और अनुसूचित जाति (एससी) घटक योजना' का एक हिस्सा है।
4.	केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस)	सीसीआरएस ने आधुनिक उपचारों के साथ आयुष उपचारों की प्रभावकारिता और सुरक्षा को मान्य करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और नैदानिक परीक्षणों को प्रोत्साहित करके आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धति के साथ सिद्ध अभ्यासों को एकीकृत करने की पहल की है। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान कैंपस में एकीकृत सिद्ध कैंसर ओपीडी कार्यशील है और सफदरजंग अस्पताल में सिद्ध कैंसर ओपीडी कार्यशील है, जो सीसीआरएस के तहत सफदरजंग, नई दिल्ली में स्थित सिद्ध नैदानिक अनुसंधान इकाई के माध्यम से सिद्ध पद्धति से कैंसर रोगियों की उपशामक देखभाल में सहायता कर रही है। सीसीआरएस ने कैंसर प्रबंधन, प्रजनन और शिशु देखभाल एवं पुनर्योजी चिकित्सा के लिए सहयोगी अनुसंधान गतिविधियों को शुरू करने हेतु एम्स ऋषिकेश के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं।
5.	केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन)	सीसीआरवाईएन विभिन्न स्वास्थ्य दशाओं के लिए योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की प्रभावकारिता पर वैज्ञानिक साक्ष्य-सृजन के उद्देश्य से एम्स**,** निम्हांस**,** आईआईटी, एस-वीवाईएएसए तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों जैसे प्रमुख संस्थानों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान कर रहा है। इन अनुसंधानों के निष्कर्ष निवारक, प्रोत्साहक तथा एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल में योग के एकीकरण के सहायतार्थ साक्ष्य-आधार का सुदृढ़ीकरण करते हैं। परिषद, अपने केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (सीआरआईवाईएन) तथा सहयोगी केंद्रों के माध्यम से योग सेवाओं को भी सहायता उपलब्ध कराती है।
6.	राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस)	यह संस्थान सिद्ध चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत कैंसर, नेत्र रोग तथा वृक्क विफलता जैसे विभिन्न रोगों के उपचार हेतु आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल

		पद्धतियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर उपचार सेवाएँ प्रदान कर रहा है।
7.	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई)	एमडीएनआईवाई वर्ष 2013 से लगातार चौथी बार के लिए पारंपरिक चिकित्सा (योग) के लिए एक डब्ल्यूएचओ सहयोगी केंद्र है। एमडीएनआईवाई ने योग चिकित्सा और अनुसंधान के लिए 4 योग केंद्र स्थापित किए हैं। एमडीएनआईवाई ने दिल्ली एनसीआर में 20 सीजीएचएस आरोग्य केंद्रो में योग की निवारक स्वास्थ्य देखभाल इकाई संचालित कर रहा है।
8.	राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान (एनआईएच)	राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान ने शिक्षा, अनुसंधान तथा स्वास्थ्य देखभाल सेवा के क्षेत्र में होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को मुख्यधारा की स्वास्थ्य पद्धति के साथ एकीकृत करने हेतु निम्नलिखित कदम उठाए हैं: i. राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, कोलकाता में आधुनिक चिकित्सा के विशेषज्ञ चिकित्सकों (सामान्य चिकित्सा के 10 चिकित्सक, रेडियोलॉजी एवं इमेजिंग, त्वचा रोग, दंत चिकित्सा, सामान्य शल्य चिकित्सा, स्त्री एवं प्रसूति रोग, ऑन्कोलॉजी, एनेस्थीसिया तथा ईएनटी) को रोग निदान पर विशेषज्ञ राय प्रदान करने तथा विशेष रूप से विद्यार्थियों के समक्ष प्रदर्शन हेतु नियुक्त किया गया है। आपातकाल की स्थिति में वे एलोपैथिक औषधियाँ भी लिखते हैं। ii. इसके अतिरिक्त, एनआईएच, कोलकाता प्रत्येक मंगलवार को सेन्टेनेरी अस्पताल, श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता में मुख्यधारा की चिकित्सा के साथ-साथ होम्योपैथिक परामर्श भी उपलब्ध कराता है। iii. प्राथमिकता वाली रोग दशाओं के लिए आयुष का आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकरण करते हुए साक्ष्य-आधारित उपचार प्रोटोकॉल तथा नैदानिक अभ्यास दिशानिर्देशों का विकास करना। iv. आयुष ग्रिड, टेली-आयुष सेवाओं, इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य अभिलेखों तथा आधुनिक डिजिटल स्वास्थ्य प्लेटफॉर्मों के साथ अंतर-संचालनीयता के माध्यम से डिजिटल एकीकरण। v. राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान अपने मूलभूत सिद्धांतों का पालन करते हुए आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के साथ समन्वित रूप से स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है। एनआईएच में एक्स-रे, यूएसजी आदि की सुविधाएँ आधुनिक चिकित्सा के विशेषज्ञ चिकित्सकों के साथ उपलब्ध हैं। एनआईएच में आधुनिक प्रयोगशाला जाँचें पीपीपी मॉडल के अंतर्गत हिंद लैब्स द्वारा की जाती हैं। vi. एनआईएच के विद्यार्थी/प्रशिक्षु निम्नलिखित आधुनिक चिकित्सा सुविधा केंद्रो में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं– -स्त्री एवं प्रसूति रोग विषय में चित्तरंजन सेवा सदन अस्पताल में इंटर्नशिप प्रशिक्षण। -सामुदायिक चिकित्सा विषय में बेलेघाटा आईडी एवं बीजी अस्पताल में इंटर्नशिप प्रशिक्षण। बीएचएमएस के विद्यार्थियों को फॉरेंसिक मेडिसिन एवं टॉक्सिकोलॉजी विषय के अंतर्गत आर जी कर चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल में पोस्टमार्टम प्रक्रियाओं का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाता है।

9.	राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन)	संस्थान, सेंटर फॉर क्रॉनिक डिजीज कंट्रोल (सीसीडीसी) के सहयोग से योग-आधारित हृदय पुनर्वास सेवाओं, परामर्श एवं योग सहित एकीकृत मातृत्व सेवाओं तथा पारंपरिक चिकित्सा मूल्यांकन एवं नैदानिक सेवाओं के साथ-साथ प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग उपचारों को सम्मिलित करने वाली जीवनशैली-आधारित नैदानिक सेवाओं जैसी पहलों के माध्यम से समन्वित एवं रोगी-केंद्रित एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा दे रहा है।
10.	पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच)	एनईआईएएच, शिलांग ने रोगियों के हित में व्यापक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के लिए अपने अस्पताल में फिजियोथेरेपी, दंत चिकित्सा, आहार-विज्ञान आदि की आधुनिक पद्धतियों का एकीकरण किया है। इसके अतिरिक्त, रोगियों के आयुर्वेदिक निदान के पूरक उपचार के रूप में प्रयोगशाला एवं रेडियोलॉजी संबंधी प्रक्रियाएँ नियमित रूप से संचालित की जाती हैं। अनिवार्य रोटेटरी इंटर्नशिप कार्यक्रम के अंतर्गत, एनईआईएएच अपने प्रशिक्षुओं को मेघालय सरकार के अधीन विभिन्न अस्पतालों एवं पीएचसी में भेजकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के साथ सहयोग करता है।
11.	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए)	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए), जयपुर साक्ष्य-आधारित अनुसंधान एवं सहयोगात्मक अध्ययनों के माध्यम से आयुर्वेद को आधुनिक स्वास्थ्य पद्धति के साथ एकीकृत करने को बढ़ावा देने हेतु अनेक एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल पहलों पर सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। इसकी प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं: शालक्य तंत्र (आप्थैल्मोलॉजी) के क्षेत्र में वर्तमान में दो अनुसंधान अध्ययन संचालित किए जा रहे हैं, ताकि नॉन-प्रोलिफेरेटिव डायबिटिक रेटिनोपैथी (एनपीडीआर) तथा एंटीरियर यूवाइटिस के प्रबंधन में आयुर्वेदिक उपचार एवं पारंपरिक आधुनिक चिकित्सा उपचार की तुलनात्मक प्रभावकारिता एवं सुरक्षा का मूल्यांकन किया जा सके। ये अध्ययन सवाई मानसिंह (एसएमएस) चिकित्सा महाविद्यालय, जयपुर के सहयोग से संचालित किए जा रहे हैं। एनआईए, टाटा मेमोरियल सेंटर, मुंबई के साथ "नॉन-स्मॉल सेल लंग कार्सिनोमा (एनएससीएलसी) में आयुर-एलसी (एक नवीन आयुर्वेदिक हर्बो-मिनरल फॉर्म्युलेशन) के कैंसर-रोधी प्रभाव: एक इन विवो प्रायोगिक अध्ययन" शीर्षक से एक अनुसंधान अध्ययन पर सहयोग कर रहा है। इस सहयोगात्मक अनुसंधान का उद्देश्य कैंसर के एकीकृत प्रबंधन के लिए वैज्ञानिक साक्ष्य उत्पन्न करना तथा आयुष-आधारित उपचारों के साक्ष्य-आधार एवं विश्वसनीयता को सुदृढ़ करना है।
12.	आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए)	वैज्ञानिक और नवीकृत अनुसंधान अकादमी (एसीएसआईआर)-सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनआईआईएसटी), त्रिवेंद्रम और आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) के बीच दो संयुक्त पी.एच.डी. डिग्री कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।
13.	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए)	i. अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) ने रोगी देखभाल, अनुसंधान तथा शिक्षा के लिए अग्रणी चिकित्सा संस्थानों के साथ सहयोग करके एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल मॉडल को अपनाया है। ii. एआईआईए ने संयुक्त अनुसंधान, छात्र विनिमय, संकाय विनिमय तथा

		प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए यूएसए, यूके, जर्मनी, जापान, ब्राज़ील, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा सहित अन्य देशों के विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संगठनों के साथ भी अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग स्थापित किया है। iii. अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान कार्यशील आईसीयू सहित 200 बिस्तरों वाला एक विशिष्ट देखभाल अस्पताल है। iv. यह अस्पताल आयुर्वेद के लिए आदर्श एकीकृत चिकित्सा अस्पताल के रूप में कार्य करता है तथा इसमें विभिन्न नैदानिक एवं सहायक-नैदानिक विभागों में आधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञ भी उपलब्ध हैं। v. संस्थान ने एकीकृत ऑन्कोलॉजी, वक्ष रोग, मेटाबॉलिक रोग, जीवनशैली रोग, रूमेटोलॉजी तथा त्वचा रोग क्लीनिक स्थापित किए गए हैं। vi. संस्थान ने 44 विशिष्टता बाह्य रोगी विभाग स्थापित किए हैं, जिनके माध्यम से एकीकृत उपचार प्रदान किए जा रहे हैं। vii. एआईआईए ने संपूर्ण भारत के सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों यथा भारत का सर्वोच्च न्यायालय परिसर, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, केवड़िया, गुजरात तथा आईआईटी दिल्ली में विस्तार केंद्र स्थापित किए हैं। viii. एआईआईए ने एम्स, झज्जर में कार्यशील एकीकृत कैंसर क्लीनिक एवं अनुसंधान केंद्र तथा सफदरजंग अस्पताल एवं वीएम चिकित्सा महाविद्यालय, नई दिल्ली में एकीकृत चिकित्सा सेवाएँ स्थापित की हैं। ix. एआईआईए अस्पताल एनएबीएच से मान्यता प्राप्त है, जो रोगियों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने को प्राथमिकता देता है। x. किफायती लागत पर प्रतिदिन औसतन 1,500 से अधिक रोगियों की उपस्थिति निरंतर दर्ज की जाती है।